जिस समय प्रकाश (होता है) उसी समय अंधकार जाता है। उसी क्षण। प्रकाश यानी बाह्य प्रकाश नहीं, अन्दर ज्ञायक की धारा जो अन्दरसे स्वानुभूति (प्रगट हो), अथवा ज्ञायक की धारा प्रगट हो उसी क्षण अंधकार का नाश होता है। स्वानुभूति हुई उसी क्षण भिन्न पड़ जाता है। उसका अभ्यास तो पहले होता है। प्रतिक्षण भिन्न पड़ने का प्रयत्न करता है।

मुमुक्षु :- निश्चयनय का पक्ष भी कभी आया नहीं, तो निश्चयनय का पक्ष यानी निश्चयनय के विषयभूत आत्मा का-ज्ञायक का निर्णय?

समाधान :- मैं यह ज्ञायक ही हूँ, ऐसा निर्णय कभी किया नहीं। सब बाहर में पर्याय ऊपर ही दृष्टि गई, द्रव्य को भूल गया है। द्रव्य क्या है उसे भूल गया है। बाहर सब भेद.. भेद.. भेद.. पर और विभाव पर ही दृष्टि गई है। अशुभमें-से शुभ में। ऐसे भेद पर ही दृष्टि रही है। इसलिये निश्चय का पक्ष कभी आया नहीं। द्रव्य को कभी पहचाना नहीं है। द्रव्य पर दृष्टि गई ही नहीं। पर्याय को पहचानता हीं है लेकिन ऐसे भेद में और विभाव में रुक जाता है। द्रव्य जो अपना अस्तित्व उस द्रव्य को उसने पहचाना नहीं, द्रव्य पर दृष्टि गई ही नहीं। द्रव्य को पहचाना नहीं है। यदि सहीरूपसे द्रव्य को पहचाने तो पर्याय को भी पहचाने। लेकिन उसने सच्चे रूपसे कभी द्रव्य को पहचाना ही नहीं। निश्चय का पक्ष कभी आया ही नहीं। परिणति व्यवहार की हो रही है। भेद.. भेद.. भेद.. ऐसे परिणति व्यवहार की हो रही है। इसलिये वह भेद.. भेद में रुका है। इसलिये निश्चय का पक्ष यानी जो एकरूप आत्मा है कि जिसमें भेद नहीं है, एक अस्तित्व जो अपना अभेद है उसे ग्रहण किया नहीं है। यह भेदरूप परिणति हो रही है, अभेद की परिणति जो दृष्टि में आनी चाहिये, द्रव्य पर दृष्टि होनी चाहिये वह हुई नहीं, इसलिये उसका पक्ष कभी आया नहीं। पक्ष यानी एकान्त ऐसा उसका अर्थ नहीं है। उसे द्रव्य का पक्ष नहीं आया है, द्रव्य पर दृष्टि गई नहीं। इसलिये निश्चय का पक्ष आया नहीं। उसकी मुख्यता जो होनी चाहिये वह हुई नहीं।

मुमुक्षु :- सच्चे ज्ञानपूर्वक जो मुख्यता होनी चाहिये वह हुई नहीं।

समाधान :- हाँ, सच्चे ज्ञानपूर्वक जो मुख्यता होनी चाहिये वह हुई नहीं। फिर पर्याय का ज्ञान साथ में रहता है, लेकिन उसे द्रव्य की जो मुख्यता होनी चाहिये, द्रव्य पर दृष्टि देकर जो मुख्यता होनी चाहिये वह हुई नहीं। पर्याय की ही मुख्यता रही है।

मुमुक्षु :- सविकल्प निर्णय में हम इतना ले कि ज्ञायक आत्मा की मुख्यता उसे निरंतर रहती है।

समाधान :- हाँ, ज्ञायक की मुख्यता रहनी चाहिये। ज्ञायक की मुख्यता, पर्याय की गौणता। पर्याय नहीं है ऐसा नहीं, लेकिन उसकी गौणता।

मुमुक्षु :- सविकल्प निर्णयवाले को ऐसी स्थिति होती है कि उसे ज्ञायक की मुख्यता छूटती नहीं। तो उसका सविकल्प निर्णय सच्चा।

समाधान :- हाँ। निर्णय। लेकिन परिणति अभी बाकी रहती है।

पूज्य बहिनश्री की तत्त्वचर्चा–सी.डी.–४ A

मुमुक्षु :– .. ज्ञानी की अवस्था में प्रवेश करने का द्वारा है।

समाधान :– कोई भी कार्य में?

मुमुक्षु :– जी हाँ।

समाधान :– बहुत ज्यादा प्रवृत्ति में जुड़ना कम कर दे, ऐसा कहते हैं। फिर उसमें शोक लिया है?

मुमुक्षु :– माताजी! उसमें ऐसे लिया है, कोई भी काम के प्रसंग मे अधिक शोच में पड़ना, ज्याद विचार करने में अथवा ज्यादा चिंता में..

समाधान :– शोच.. शोच, ठीक!

मुमुक्षु :– (शोच में) पड़ने का अभ्यास कम रखना, ऐसा करना अथवा होना वह ज्ञानी की अवस्था में प्रवेश करने का द्वार है।

समाधान :– ज्ञानी की अवस्था में?

मुमुक्षु :– जी, हाँ।

समाधान :– कोई भी प्रसंग में बहुत ज्यादा कोई कार्य में शोच यानी उसके विचार करते रहना, बहुत ज्यादा विचार करनेसे उसमें ऐसी एकत्वबुद्धिसे विचार करनेसे नुकसान होगा। बहुत ज्यादा प्रवृत्ति और बहुत ज्यादा विचार करनेसे तुझे जो अन्दर जाना है, आत्मा न्यारा है, ज्ञायक है, कोई भी विकल्प आत्मा का स्वरूप नहीं है, यह तुझे जानना है तो उसमें तुझे नुकसान होगा। प्रवृत्ति का बहुत ज्यादा रस लग जायेगा तो, ऐसा कहते हैं। बहुत प्रवृत्ति के रस में, विचार में.... प्रयोजनभूत हो वह ठीक है, अप्रयोजनभूत में अधिक ज्यादा विचार कोई प्रवृत्ति के बहुत ज्यादा विचार करना वह तो (नुकसारनकारक है)। अन्दर में मुमुक्षु हो उसे, मेरे आत्मा का (हित) कैसे हो, ऐसा होना चाहिये।

मुमुक्षु :– बाहर की बात है? बाह्य प्रसंगों की बात है। कोई भी काम के प्रसंग में...

समाधान :– चाहे जो काम के प्रसंग में, बाह्य प्रसंग के बहुत विचार करनेसे, उसका शोच करना, उसके बहुत विचार करनेसे उसमें रुक जाने का कारण होगा और तेरे आत्मा के विचार उसमें अटक जायेंगे, ऐसा कहते हैं। आत्मा के विचार अटकने का कारण बनेगा, बाह्य कार्यों में रुकनेसे। निष्प्रयोजन के विचार करनेसे बाहर ही बाहर के कार्य, इसका ऐसा करुँ, वैसा करुँ, सब लौकिक कार्य में ज्यादा विचार करना, तेरे आत्मा के विचारों में नुकसान का कारण होगा। उसका बहुत रस लगेगा तो।

मुमुक्षु :– आत्मा सम्बन्धित ज्यादा विचार करनेसे, ज्यादा चिन्ता करनेसे, ऐसा कुछ नीं

कहना चाहते।

समाधान :- ऐसा नहीं है।

मुमुक्षु :- यहाँ तो खास बाहर की ही बात है।

समाधान :- हाँ, बाहर की बात है। आत्मा सम्बन्धित ज्यादा विचार करना, ऐसा नहीं है, ऐसा नहीं है। आत्मा का निर्णय करने के लिये जो विचार (चले), श्रुतसे नक्की करने के विचार आये वह तो एक निर्णय दृढ़ होने का कारण होता है। अन्दर अभी कुछ प्रगट नहीं हुआ है। ज्यादा विचार करके तत्त्वनिर्णय होने का कारण होगा। तत्त्व निर्णय होगा। बहुत ज्यादा जो आत्मा सम्बन्धित, जिसमें आत्मा को लाभ हो वैसे विचार। बाकी निष्प्रयोजन तर्क और कुतर्क में रुकना (वह ठीक नहीं है), उसमें हेतु आत्मा का होना चाहिये। हेतु मात्र जानने के लिये हो या अपने यह जान लो, पढ़ लो, उसके तर्क और कुतर्क इत्यादि किया करे तो वह तो कुछ लाभ का कारण नहीं है। आत्मा के लिये होना चाहिये। इसका ऐसा अर्थ होता है, इसका ऐसा अर्थ होता है, इसका यह अर्थ होता है, ऐसे तर्क (करता रहे), आत्मा को लागू पड़े, स्वभाव को लागू पड़े ऐसे (नहीं), कुतर्क करता रहे वह कोई आत्मा को लाभ का कारण नहीं होता।

मुमुक्षु :- आत्मा के यथार्थ निर्णय हेतु चाहे जितना समय विचार करना पड़े वह तो आत्मा का निर्णयः

समाधान :- वह आत्मा के निर्णय के लिये है, चाहे जितने विचार करे। उसका अन्दर मंथन किया करे, खुद को जबतक बैठे नहीं तबतक। मुझे आत्मा का स्वरूप कैसे बैठे? उसके द्रव्य का, गुण का, पर्याय का चाहे जितनी भी बार निर्णय करने हेतु विचार करे, आत्मा का प्रयोजन साधने के लिये, जबतक नक्की हो तबतक पीछे लगकर विचार करके उसका अंत लावे। चाहे जितना समय लगे, वह नुकसान का कारण नहीं होता, क्योंकि वह आत्मा के लिये है। लेकिन ज्ञान के खातिर ज्ञान प्राप्त करना, उसमें आत्मा का हेतु नहीं है। अपने कुछ जानते हैं, अनेक तर्क और कुतर्क (करके उसमें) रुकना वह आत्मा के लिये नहीं है। वह मात्र ज्ञान करने के लिये है।

मुमुक्षु :- प्रत्येक कार्य के पीछे प्रयोजन आत्मा का होना चाहिये।

समाधान :- आत्मा का होना चाहिये। अथवा आत्मा भिन्न है, आत्मा न्यारा है ऐसी परिणति प्रगट नहीं होती हो तबतक शास्त्र के विचार में रुके, शास्त्र स्वाध्याय में रुके वह अलग बात है। अन्दर आगे नहीं बढ़ सकता है इसलिये देव में, गुरु में, शास्त्र में रुकता हो। क्योंकि जिज्ञासा आत्मा की है। लेकिन अन्दर पुरुषार्थ इतना नहीं कर सकता है तो श्रुत के विचार में रुके तो वह नुकसान का कारण नहीं है। शास्त्र स्वाध्याय में उसके विचार करे, उसके प्रश्न करे, उसके उत्तर करे, ऐसा करे उसमें नुकसान नहीं है। लेकिन जानने के लिये जान ले और तर्क-कुतर्क गलत प्रकारसे करने, वह कोई लाभ का कारण नहीं होता।

मुमुक्षु :– शोच करने का अभ्यास कम करना, क्योंकि वह ज्ञानी की अवस्था में प्रवेश करने का द्वार है। यानी शोच कम करना वह ज्ञानी की अवस्था में प्रवेश करने का द्वारा है, ऐसा कहते हैं?

समाधान :– प्रवेश करने का द्वारा यानी तू बाहर के विचार में ऐसी हदसे ज्यादा निष्प्रयोजन लौकिक प्रवृत्ति और लौकिक विचार में रुकेगा तो तुझे.. क्या (कहा)? ज्ञान की अवस्था में...?

मुमुक्षु :– प्रवेश करने का द्वार है, द्वार।

समाधान :– ज्ञानी की अवस्था में प्रवेश करने का द्वार यानी रोकने का द्वार.. ऐसा कहना चाहते हैं?

मुमुक्षु :– प्रवेश करने का द्वार है। यानी तू शोच कम करना वह प्रवेश करने का द्वार है।

समाधान :– हाँ, कम करना, शोच कम करना। ऐसे विचार तू कम करना। क्योंकि वह सब प्रवृत्ति में तू रुकेगा तो तेरे आत्मा का कब (करेगा)? ज्ञान की दशा तू अंतरसे कब प्रगट करेगा? ऐसी सब प्रवृत्ति तो संसार में आती ही रहेगी। तो फिर तू तेरे आत्मा का कब करेगा? ये मनुष्यजीवन ऐसे ही चला जा रहा है। सब लौकिक व्यवहार, हदसे ज्यादा जँजाल, किसका व्यवहार रखना, ये करना, वह करना,... वह तो श्रीमद् में आता है न? अल्प आवकारी होना, अल्प भाषण करना, अल्प यह करना, ऐसा सब आता है। अर्थात् तेरे लौकिक व्यवहार संक्षिप्त कर देना। तो तुझे आत्मा का कुछ विचार करने का अवकाश मिलेगा। बाह्य बड़प्पन लेने के लिये, लौकिक में बड़ा होना, बाह्य सब निष्प्रयोजन और चारों ओर खुशामद करके बड़ा होना, वह सब करनेसे तेरे आत्मा का कब होगा? ऐसे सब लौकिक विचार करना कम करना। यह मनुष्यजीवन चला जाता है, तेरे आत्मा के लिये तुझे समय कब मिलेगा? अन्दर ज्ञानदशा प्रगट करने का। बहुत बाह्य व्यवहार और सब लौकिक बहुत बड़ा कर दिया हो तो तुझे आत्मा का समय कब मिलेगा? उसे कम कर देना। ऐसा बहुत होता है न, व्यापार बहुत बढा दे, पुत्र, पुत्री आदि जँजाल बढ़ा देगा तो तेरे आत्मा का कब करेगा? तुजे उसके लिये कब समय मिलेगा?

मुमुक्षु :– एक और जगह श्रीमद्जीने लिखा है, दृश्य को अदृश्य किया और अदृश्य को दृश्य किया ऐसा ज्ञानीपुरुष का अनन्त ऐश्वर्य वीर्य कह सकने योग्य नहीं है।

समाधान :– दृश्य को अदृश्य किया। ये सब जो दिखता है उसे अदृश्य किया। अदृश्य को दृश्य किया (अर्थात्) जो दिखता नहीं है लेकिन अन्दर शक्ति में है। और यह सब जो स्थूल आँखोंसे दिखता है उन सबको अदृश्य कर दिया। यानी उन सबपरसे उपयोग के वापस खींच लिया। दृष्टि को अन्दर की। बाह्य दृष्टि को उठा ली। और अन्दर जो अदृश्य दिखाई नहीं देता कि आत्मा क्या है, उसकी शक्ति क्या है, वह दिखता नहीं उसे खुदने

दृश्य किया कि मैं यह ज्ञायक ही हूँ, ये रहा, मैं ज्ञायक हूँ, इस ज्ञायक में परद्रव्य नहीं है, विभाव नहीं है। मेरे ज्ञायक में कुछ नहीं है, मैं तो ऊससे दूर हूँ। यह सब जो दिखाई देता है मेरे स्वरूप में अंतर में नहीं है। एकत्वबुद्धिसे माना है। सब भिन्न है, सब ज्ञेय मेरेसे भिन्न है। मैं ज्ञायक भिन्न हूँ। यह दृश्य दिखाई देता है उसे स्वयं से भिन्न किया। उसे अदृश्य किया, वह कोई मेरा स्वरूप नहीं है। मैं उससे भिन्न हूँ। जो अदृश्य आत्मा दिखाई नहीं देता उसे दृश्यमान किया कि मैं यह आत्मा ये रहा। उस आत्मा को प्रगट किया, आत्मा की स्वानुभूति की। वह ज्ञानी का ऐश्वर्य आश्चर्यकारी है, ऐसे लिया है न? यह उन्होंने जो अपूर्व पुरुषार्थ करके अन्दरसे प्रगट किया वह यथार्थ में आश्चर्यकारी है, ऐसा कहते हैं। दृश्य को अदृश्य किया और अदृश्य को दृश्य किया।

आता है न? मुनिओंका। जगत के जीव जहाँ जाग रहे हैं, वहाँ मुनि सो रहे हैं और मुनि जहाँ जाग रहे हैं, जहाँ मुनि जागते हैं, वहाँ ये सब सो रहे हैं। ऐसा यह है। दृश्य को अदृश्य किया। ये सब दिखाई देता है वह सब नहीं है, ये सब मेरे में नहीं है। वह उसमें है, मैं मुझमें हूँ। जो ज्ञायक दिखाई नहीं देता, ज्ञायक को प्रगट किया उसने अंतर में गहराई में जाकर स्वानुभूति प्रगट की। उसके मूल में जाकर विकल्पसे भिन्न होकर, अन्दरसे भेदज्ञान करके भेदज्ञान की धारा प्रगटकर अन्दर स्वानुभूति को प्रगट की। अन्दर निर्विकल्प दशा में स्वानुभूति जो आत्मा की, उसे प्रगट की। जो अदृश्य था, जो अनन्त कालसे दुर्लभ था उसे प्रगट किया। अदृश्य को दृश्य किया। स्वयं तो दृश्यमान है लेकिन स्वयं भूल गया है। उसे स्वानुभूति में प्रगट किया। उसे दृश्यमान किया, इन सबको अलग किया। यह उनका कोई ऐश्वर्य..?

मुमुक्षु :- अनन्त आश्चर्यकारक अननन्त ऐश्वर्य वीर्य वाणी से कह सकने योग्य नहीं है।

समाधान :- वाणीसे कैसे कहें? पूरा परिवर्तन किया। जो अनन्त कालसे नहीं किया था वह उसने परिवर्तन किया। यह उनका पुरुषार्थ कोई अपूर्व है। लेकिन स्वयं का स्वभाव है। स्वभाव प्रगट किया है। लेकिन अनन्त कालसे दुर्लभ हो गया था इसलिये उसका आश्चर्यकारी पुरुषार्थ है। इस अपेक्षासे। समझ पीछे सब सरल है, समझने के बाद सरल है। लेकिन अनन्त कालसे प्रगट नहीं किया है इसलिये दुर्लभ है। इसलिये उसका आश्चर्यकारी पुरुषार्थ है, ऐसा कहते हैं।

दृश्य को अदृश्य करना, उसका पुरुषार्थ कितना होगा तब होता है। ये जो दृश्य है उससे भिन्न हो जाता है। सबसे भिन्न हो जाता है। दृष्टि को अन्दर ले जाता है। इन सबसे एकदम निराला हो जाता है, उसका रस ऊतर जाता है। निराला होकर अन्तर में जाता है। अन्तर में उसे कोई अपूर्वता लगती है। अन्तरसे आत्मा आश्चर्यकारी आत्मा प्रगट होता है और उसकी स्वानुभूति प्रगट होती है। ये सब छूट जाये इसलिये शून्य नहीं हो जाता, लेकिन आश्चर्यकारी विभूति अंतरमें-से प्रगट होती है। ये सब छूट जाता है और उपयोग अन्दर में

जम जाता है। यह उनका कोई आश्चर्यकारी पुरुषार्थ है।

मुमुक्षु :– वीर्य कहकर पराक्रम कहना चाहते हैं।

समाधन :– हाँ, उसका पुरुषार्थ कोई अलग है। शुभभाव का पुरुषार्थ जीवने बहुत बार किया है। अशुभसे थककर शुभ में आया, शुभ में ऐसे उच्च कोटि के शुभभाव किये, मुनि हो गया, सब किया, पंच महाव्रत पाले, सब किया लेकिन शुभभावों में रुक गया। लेकिन शुभसे भी भिन्न जो शुद्धात्मा उस शुभ को भी दृश्यमेंसे निकालकर अन्तर में जो अदृश्य है उसे दृश्य किया। श्रुत का चिन्तवन भी जहाँ रहता नहीं और मात्र निर्विकल्प दशा को वह दृश्यमान करता है। इसलिये वह उनका पुरुषार्थ कोई पुरुषार्थ है, ऐश्वर्य कोई अलग है। लेकिन अभी दशा अधूरी है इसलिये बाहर आते हैं इसलिये श्रुत का चिंतवन इत्यादि शुभभाव में होता है। लेकिन वह निराले हैं, उसे हेयबुद्धिसे मानते हैं।

मुमुक्षु :– अन्दर जो शुभभाव होते हैं वह भी दृश्य है।

समाधान :– दृश्य है। उस दृश्य को भी अन्दर में भिन्न होकर स्वरूप में जम जाये तब तो सब अदृश्य हो जाता है। स्वरूप में जहाँ अन्दर जम गया, वहाँ तो उसे कुछ दिखता नहीं, अकेला आत्मा ही दृश्यमान है। बाहर आये तब उपयोग बाहर आया, दिखाई दे, लेकिन स्वयं भिन्न है। उन सब में एकत्वबुद्धि थी, ये सब मुझसे भिन्न है। ये कोई मेरा स्वरूप ही नहीं है, मैं भिन्न हूँ। अदृश्य, दूर है मुझसे। एक ज्ञायक ही उसे, रात–दिन उसे ज्ञायक ही दृष्टि में दिखाई देता है कि मैं तो ज्ञायक ही हूँ। उपयोग भले बाहर जाये, उसकी दृष्टि में एक ज्ञायक ही दिखाई दे रहा है। प्रतिक्षण, निरंतर–बिना अंतर, जागते, सोते, बैठते, स्वप्न में एक ज्ञायक दिखाई देता है। (बाहर में सब) दिखाई दे लेकिन फिर भी उससे दूर है और अन्दर स्वानुभूति में तो अदृश्य ही हो गया है। अकेला आत्मा दृश्यमान है। बाहर आये तो भी आत्मा ही दृश्यमान है। ये सब तो गौण है। भिन्न है, आत्मा उससे भिन्न दृष्टिगोचर होता है।

मुमुक्षु :– बाहर आते हैं तब भी वास्तव में तो दृश्यरूप तो अपना आत्मा ही है।

समाधान :– आत्मा ही दृश्यरूप है, यह सब अदृश्य है। उपयोग में दिखे तो भी उसे तो भिन्न ही भासित होता है।

मुमुक्षु :– मुझे हीराभाईने कहा कि कोई प्रश्न हो तो पूछीये। मैंने कहा कि, पंद्रह मिनट बहिनश्री बोलेगी उसमें मुझे समाधान मिलेगा। प्रश्न की कोई जरूरत नहीं है।

समाधान :– कोई कुछ पूछता है तो निकलता है। मैं अपनेआपसे कुछ बोलती नहीं।

मुमुक्षु :– माताजी की एक पद्धति है कि कुछ पूछें तो उनके श्रीमुखसे कुछ बात नीकलती है। मैं तो ऐसा मानता हूँ, मेरी प्रार्थना स्वीकार हुई है और आप पंद्रह मिनट बोलने लगे। : आप जो कहते हो वही समाधान है।

समाधान :– ऐसे कोई महेमान आते हैं... कोई महेमान हररोज आते हैं, कुदरती होता